



संस्थाध्यक्षों हेतु स्व: अधिगम सामग्री



अधिगम क्षेत्र – शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण

शीर्षक

उत्तराखंड के विद्यालयों में निपुण भारत मिशन के सफल क्रियान्वयन में
विद्यालय प्रमुख का नेतृत्व

स्कूल लीडरशिप एकेडमी, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट) उत्तराखण्ड, देहरादून

उत्तराखण्ड के विद्यालयों में निपुण भारत मिशन के सफल क्रियान्वयन में विद्यालय प्रमुख का नेतृत्व

उद्देश्य:

इस मॉड्यूल के उपरान्त विद्यालय प्रमुख निम्न उद्देश्यों को प्राप्त कर सकेंगे—

1. निपुण भारत मिशन की संकल्पना की समझ विकसित करना।
2. बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) कौशलों पर समझ विकसित करना।
3. बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) की आवश्यकता की समझ विकसित करना।
4. बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय आधारित आकलन की समझ विकसित करना।
5. निपुण भारत मिशन—बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) के सफल क्रियान्वयन में नेतृत्व की समझ का विकास करना।

मुख्य शब्द

निपुण भारत (NIPUN)-National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy, विद्याप्रवेश-स्कूल तैयारी मॉड्यूल, FLN- Foundational Literacy and Numeracy (बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान), विद्यालय आधारित आकलन, सीखने के प्रतिफल

प्रस्तावना

ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट (जी0एम0आर0 2015) के अनुसार भारत सहित अन्य विकासशील देशों में शिक्षा तक पहुँच में प्रभावी सुधार हुआ है, हालांकि गुणवत्ता अभी भी चिंता का कारण है। भारत में किए गये विभिन्न उपलब्धि सर्वेक्षण जैसे 'असर' (ASER) ने विभिन्न राज्यों में विद्यार्थियों के बुनियादी कौशलों की उपलब्धि में व्यापक असमानताओं की जानकारी दी है। एनसीईआरटी द्वारा एक सर्वे किया गया था जिसके माध्यम से यह पता लगा था कि कतिपय बच्चे पाँचवी कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी पाठ को समझकर पढ़ने में सक्षम नहीं होते हैं। कक्षा 3 के राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एम0एच0आर0डी0/2014) ने भी इसकी पुष्टि की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि वर्तमान में अनुमानित 5 करोड़ से भी ज्यादा शिक्षार्थियों ने बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान नहीं सीख पाये हैं। अर्थात् ऐसे बच्चों में सामान्य लेख को पढ़ने, समझने और अंकों के साथ बुनियादी जोड़-घटाव करने की क्षमता भी नहीं है।

चर्चा प्रश्न:

- यदि बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान कौशलों की संप्राप्ति उनकी शुरुआती कक्षाओं में न हो पाए तो उन्हें आगे की कक्षाओं में किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान कौशलों की प्राप्ति हेतु क्या प्रयास किये गये हैं?

बच्चों द्वारा पढ़ने और लिखने में संख्याओं के साथ कुछ बुनियादी संक्रियाएँ करने की क्षमता आगे की स्कूली शिक्षा में और जीवन भर सीखते रहने की बुनियाद रखती हैं साथ ही भविष्य में सीखने की यह एक पूर्व शर्त भी है। शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक बुनियादी मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करना है। जिसमें प्रत्येक छात्र को कक्षा 3 तक आवश्यक रूप से मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को प्राप्त करना शामिल किया गया है। जिसमें सीखने की बुनियादी आवश्यकताओं अर्थात् मूलभूत स्तर पर पढ़ना, लिखना और अंकगणितीय कौशलों को हासिल करने पर ही हमारे विद्यार्थियों के लिए बाकी नीति प्रासंगिक होगी। आधारभूत साक्षरता तथा संख्यात्मकता के माध्यम से छात्र पढ़ने-लिखने, बोलने और व्याख्या करने में सक्षम होते हैं।

इसके लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 5 जुलाई 2021 को प्राथमिक आधार पर मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन 'निपुण भारत' स्थापित किया गया है। इसके अनुसार सभी प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लिए राज्य केंद्र शासित राज्यों में 2026-27 तक प्रत्येक बच्चे को तीसरी कक्षा के अंत तक पढ़ने, लिखने एवं अंकगणित सीखने की क्षमता प्रदान की जानी है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

मिशन का मुख्य उद्देश्य 3 से 9 वर्ष के आयु के बच्चों के अधिगम आवश्यकताओं को पूर्ण करना है और इसके लिए राष्ट्रीय मिशन निपुण भारत की टैग लाइन 'सब बच्चे समझें भाषा और गणना' की संकल्पना की गई है।



इस प्रकार जो बच्चे कक्षा तीन तक बुनियादी साक्षरता व संख्यात्मक कौशल प्राप्त करने में सफल रहते हैं उन्हें आने वाली कक्षाओं के पाठ्यक्रम को पढ़ने में आसानी होती है।

चर्चा प्रश्न:

- बुनियादी साक्षरता में आप के अनुसार कौन-कौन से घटक हैं ?
- एक विद्यालय प्रमुख के रूप में विद्यार्थियों में बुनियादी भाषा प्राप्ति हेतु आप क्या प्रयास कर सकते हैं ?

❖ बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता ज्ञान एक अवधारणात्मक समझ :- प्रारंभिक भाषा और साक्षरता

भाषा केवल बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने से नहीं बल्कि इससे कहीं बढ़कर है। भाषा के माध्यम से एक व्यक्ति दुनिया की समझ बना सकता है। प्रारंभिक स्तर पर छात्रों के लिए भाषा की समझ होना बहुत महत्वपूर्ण है। भाषा का पूर्व ज्ञान भाषा में साक्षरता कौशल के निर्माण में सहायता करता है।

मूलभूत भाषा एवं साक्षरता के घटक

- **मौखिक भाषा का विकास:** पठन व लेखन कौशल विकास के लिए मौखिक भाषा अनुभव महत्वपूर्ण होता है।
- **ध्वन्यात्मक जागरूकता:** इस क्षेत्र में शब्द बोध, लय बोध व शब्दों में निहित ध्वनि बोध शामिल है।
- **स्मरण शक्ति:** इसमें मौखिक स्मरण, लेखन/पठन स्मरण शामिल है।
- **डिकोडिंग:** चित्र बोध, अक्षर/मात्रा की समझ, शब्द पहचान शामिल है।
- **शब्दकोष:** शब्द भण्डार
- **समझ के साथ धाराप्रवाह पठन:** सटीकता, उचित गति लय व बोध से संबंध रखता है जो बच्चों को पाठ के अर्थ जाने के अवसर देता है।
- **प्रिंट के बारे में अवधारणा:** इसमें बच्चों को कौशल बोध विकास के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की चित्रकारी को देखने के अवसर देना शामिल है।
- **लेखन:** इसमें अक्षर व शब्द लेखन साथ ही अभिव्यक्ति लेखन शामिल है।
- **पढ़ने की आदत:** अलग-अलग पुस्तकों व अन्य पठन सामग्रियों से जुड़ाव शामिल है।

❖ भाषा और साक्षरता विकास के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम

- बच्चों को बातचीत के अवसर देना अर्थात् अपनी भाषा में अपनी बात कहने बातचीत करने की भरपूर आजादी व अवसर देना
- एक प्रिंट समृद्ध वातावरण बनाना 'पढ़ने का कोना' में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की और विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषाएँ व हिन्दी आदि)
- समूहों में बातचीत के अवसर देना
- बच्चों द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने की प्रवृत्ति को भाषा सीखने की प्रक्रिया हिस्सा समझना।
- ऊँचे स्वर में पढ़ना
- मातृभाषा को सीखने-सिखाने का माध्यम बनाना घर और विद्यालय की भाषा के बीच संबंध बनाना
- कहानियाँ एवं कविताएँ सुनाना, बताना और लिखना या उस पर बातचीत के अवसर हों।
- तरह-तरह की कहानियों, कविताओं को चित्रों के आधार पर अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों।
- अपने अनुभव साझा करना और बच्चों के अनुभवों को तरजीह देना
- नाटक और रोल-प्ले के माध्यम से भाषा विकास करना
- चित्र पठन के माध्यम से भाषा विकास
- कक्षा की दीवारों का उपयोग करके
- सुनी-देखी बातों को अपने तरीके से कागज पर उतारने के अवसर हों।
- अनुभव आधारित लेखन आदि।

चर्चा प्रश्न:

- एक विद्यालय प्रमुख के रूप में आप कैसे निर्धारित करेंगे कि विद्यार्थी ने बुनियादी साक्षरता या भाषा को आत्मसात कर लिया है ?

❖ खुद से पढ़ने और भाषा निर्माण में अन्य सहायक संसाधन व उपकरण

चिंतन प्रश्न:

- प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा खुद से पढ़ने और भाषा निर्माण में सहायक संसाधन व उपकरण क्या-क्या हो सकते हैं ?

प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा खुद से पढ़ने और भाषा निर्माण में निम्न संसाधन व उपकरण बुनियादी भाषा निर्माण में सहायक होते हैं –

- बच्चों की बॉक्स फाइल
- बाल पत्रिकाएँ
- दीवार पत्रिकाएँ
- बाल अखबार
- प्रिंट समृद्ध वातावरण
- बाल साहित्य से भरे पुस्तकालय
- लर्निंग कार्ड्स
- दृश्य सामग्री
- बच्चों के पोर्टफोलियो आदि

❖ शुरुआती स्तर पर भाषा में सीखने के प्रतिफल

पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं और पाठ्यक्रम से प्राप्त होने वाले सीखने के प्रतिफल सभी हितधारकों को इस बात को समझने में मदद कर सकते हैं कि किन लक्ष्यों को प्राप्त करना है। सीखने के प्रतिफलों को आमतौर पर मूल्यांकन मानकों या मूल्यांकन के मानक स्तर के रूप में माना जाता है। सीखना एक सतत प्रक्रिया है एवं दक्षता विकसित करने के लिए उपयोग की गई सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ सीखने के प्रतिफलों को प्रभावित करती हैं।

कक्षा 1 की पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं में यदि अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की भरपूर आजादी व अवसर शामिल हों तो इसमें सीखने के प्रतिफल इस तरह हो सकते हैं—

बच्चे विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा स्कूल की भाषा का प्रयोग करते हुए बातचीत करते हैं जैसे— कविता, कहानी सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना व निजी अनुभवों को साझा करना।

कक्षा 2 में अपेक्षाओं में यदि हिंदी में सुनी गई बात, कविता, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने सुनाने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों, तो सीखने के प्रतिफल होंगे – कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते/सुनाते हैं।

चर्चा प्रश्न:

- मूलभूत संख्या ज्ञान में आप के अनुसार कौन-कौन से घटक हैं ?
- एक विद्यालय प्रमुख के रूप में विद्यार्थियों में मूलभूत संख्या ज्ञान प्राप्ति हेतु आप क्या प्रयास कर सकते हैं ?

❖ मूलभूत संख्या ज्ञान और गणितीय कौशल

मूलभूत संख्या ज्ञान का अर्थ तर्क योग्यता और साधारण गणितीय सिद्धांतों का दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में प्रयोग से है। छात्रों के अंदर संख्या बोध एवं स्थानिक समझ तब विकसित होती है जब वह निम्नलिखित कौशल प्राप्त कर लेते हैं।

- मात्रा की समझ, कम या ज्यादा एवं छोटा या बड़ा की समझ का कौशल
- एकल वस्तु एवं वस्तुओं के समूह के बीच संबंध स्थापित करने की क्षमता
- मात्राओं का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रतियों का उपयोग करना
- संख्याओं की तुलना करना आदि

❖ मूलभूत संख्यामकता और गणितीय कौशल के घटक

- **संख्या पूर्व अवधारणाएँ:** दूर-पास, कम ज्यादा, हल्का भारी, छोटा-बड़ा आदि
- **गणितीय तकनीकें:** गणितीय तरीके से दक्षता के लिए आवश्यक परंपराओं को सीखना जैसे अंकों को दर्शाने के लिए मूल दशांक प्रणाली का प्रयोग करना
- **मापन:** तीन अंकों तक जमा, घटाव, गुणा व भाग करने के लिए मानक गणितीय पद्धति की समझ व प्रयोग करना
- **आकार एवं स्थानिक समझ:** आकृतियों और स्थानिक संबंधों के कारण ही हम अलग-अलग वस्तुओं को देख पाते हैं और उनकी विशेषताओं को भी समझते हैं। अनुभवों को इस तरह समझने की क्षमता को ही स्थानिक समझ कहते हैं।
- **पैटर्न:** विशेष तरीके से पुनरावृत्ति करने वाले साधारण आकार, संख्या आदि की श्रृंखला या अनुक्रम

❖ प्रारंभिक गणित कौशल की आवश्यकता

- संख्याओं और स्थानिक समझ का दैनिक जीवन में उपयोग होना
- प्रारंभिक वर्षों के दौरान गणितीय नींव का बहुत महत्व होना
- आधारभूत संख्यात्मकता का रोजगार में एवं घरेलू स्तर पर योगदान

❖ विद्यार्थियों में प्रारंभिक गणित कौशल प्राप्ति हेतु कुछ प्रयास जो आप विद्यालय प्रमुख के रूप में कर सकते हैं—

- गणित को अन्य विषयों के साथ जोड़ना
- गणित को दैनिक जीवन के साथ जोड़ना
- बच्चों की गलतियों को सीखने के चरण समझना

- गणित के सम्बोधों को सन्दर्भ के साथ जोड़कर बताना क्योंकि गणित अमूर्त अवधारणाओं पर आधारित है
- बच्चों को समूहों में शिक्षण के अवसर देना
- गणित को आनंद के रूप में सीखना-सिखाना
- खेल और गतिविधि के साथ गणितीय अवधारणाओं को समझाना
- मूलभूत गणितीय कौशलों को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक प्रक्रियाएँ और बालकेन्द्रित गतिविधियों को विद्यालय स्तर पर बढ़ावा देना

❖ गणित में सीखने के प्रतिफल:

गणित में कक्षा 1 की पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं में यदि संख्या पूर्व अवधारणा जैसे ऊपर-नीचे, अंदर- बाहर, दूर-पास, पहले बाद, मोटा-पतला लंबी-छोटी आदि चीजों की पहचान कर चित्रों द्वारा प्रदर्शित करना शामिल हों तो इसमें सीखने के प्रतिफल इस तरह हो सकते हैं- बच्चे विभिन्न वस्तुओं को भौतिक विशेषताओं, जैसे- आकृति, आकार तथा अन्य गुणों जैसे- लुढ़कना, खिसकना के आधार पर समूहों में वर्गीकृत करते हैं।

पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं में यदि किसी दिए गये समूह में 1 से 9 तक वस्तुएँ निकाल सकें को तो इसमें सीखने के प्रतिफल इस तरह हो सकते हैं - बच्चे 1 से 9 तक की संख्याओं का उपयोग करते हुए वस्तुओं को गिनते हैं।

कक्षा 2 हेतु सीखने-सिखाने की प्रस्तावित प्रक्रियाओं में यदि संख्याओं के नाम तथा संख्याओं को लिखने का पैटर्न पहचानना शामिल हो तो सीखने के प्रतिफल इस तरह हो सकते हैं- बच्चे दो अंकों की संख्या के साथ कार्य करते हैं और 99 तक की संख्याओं को पढ़ते तथा लिखते हैं।

❖ विद्यालय स्तर पर आकलन/विद्यालय आधारित आकलन :

चर्चा प्रश्न:

- 1 विद्यालय आधारित आकलन को सीखने के लिए प्रतिफलों के साथ कैसे जोड़कर देखा जा रहा होगा ?
- 2 बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के क्रियान्वयन में विद्यालय प्रमुख के सामने क्या-क्या चुनौतियाँ आ सकती हैं ?
- 3 आपके विचार से बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान कौशलों की संप्राप्ति हेतु एक विद्यालय प्रमुख की क्या तैयारी हो सकती है ?

विद्यालय आधारित आकलन में शिक्षक द्वारा खुद मूल्यांकन कार्यों की तैयारी की जाती है।

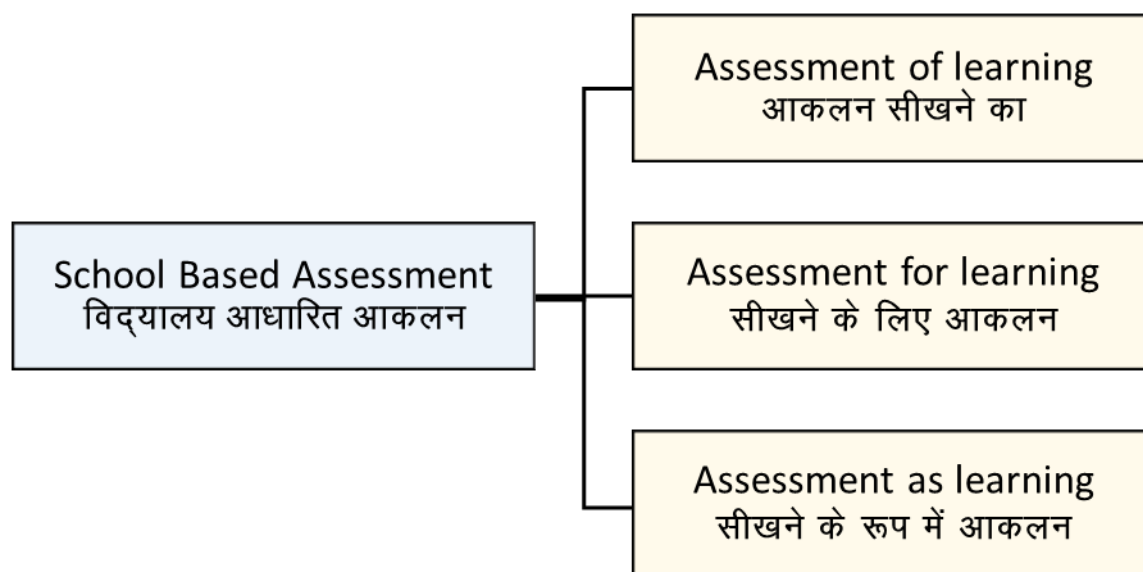
विद्यालय आधारित आकलन में शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया के दौरान समग्र रूप से सीखने के प्रतिफलों के संदर्भ में निर्दिष्ट दक्षताओं को प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता है। यह सीखने की व्यापक प्रक्रिया में निहित है। हम विद्यालय आधारित आकलन के लिए कई उपकरणों व तकनीकों का प्रयोग कर सकते हैं। उपकरणों व तकनीकों को हम ऐसे समझ सकते हैं जैसे अवलोकन एक ओर तकनीक है वहीं दूसरी ओर अवलोकन सूची एक उपकरण है।

❖ विद्यालय आधारित आकलन के उपकरण

- स्व आकलन (self-assessment)
- सहकर्मी आकलन (peer assessment)
- समूह-कार्य आकलन (group work assessment)

- पोर्टफोलियो आकलन (portfolio assessment)
- प्रामाणिक आकलन (authentic assessment)
- उपाख्यान आकलन (anecdotal assessment)
- अन्य आकलन उपकरण (other assessment tools)
- **विद्यालय आधारित आकलन के दृष्टिकोण**

हमें ये ध्यान रखना है कि यह आकलन सीखने का, सीखने के लिए, और सीखने के रूप में आकलन है।



इसमें अधिक ध्यान बच्चों के सीखने के कौशलों एवं उनके प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों और छात्रों द्वारा स्वयं विद्यालय स्तर पर आकलन करके किया जाता है। यही भिन्नता है अन्य तरह के आकलन और विद्यालय आधारित आकलन में इसमें बहुत लचीलापन, पारदर्शिता और स्वायत्तता होती है। इसमें छात्र देख सकते हैं कि वे किस तरह समय के साथ आगे बढ़ रहे हैं। छात्र अपनी निगरानी भी कर सकता है। विद्यालय आधारित आकलन को सीखने के लिए प्रतिफलों के साथ जोड़कर देखा जा रहा है।

❖ कुछ तैयारियाँ जो विद्यालय प्रमुख बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता ज्ञान हेतु अपने विद्यालय स्तर पर कर सकते हैं—

- विद्याप्रवेश गाइडलाइन की पूर्ण जानकारी स्वयं रखना व अपने शिक्षकों के साथ साझा करना। विद्याप्रवेश की जानकारी हेतु वेबलिंग में दिए गए लिंक पर जा सकते हैं।
- विषय अध्यापकों में से एक अध्यापक को नोडल नामित कर सकते हैं जो बच्चों के बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान अधिगम की प्रगति पर नजर रखे।
- नोडल अध्यापक समय-समय पर प्रगति आख्या विद्यालय प्रमुख से साझा करे जिससे विद्यालय प्रमुख उस प्रगति आख्या की समीक्षा कर सके।
- न्यून संप्राप्ति वाले बच्चों के विशिष्ट शिक्षण हेतु विद्यालय प्रमुख समय-सारणी में प्राथमिकता दे सकते हैं।
- बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने विद्यालय विकास योजना में सटीक योजना बनाना।

- गतिविधि आधारित सीखने पर जोर
- सीखने के परिणामों के आधार पर आकलन
- स्कूल तैयारी मेला (नवप्रवेशियों के लिये विद्याप्रवेश से पहले विद्यालय में लगाया जाने वाला मेला)
- प्रति वर्ष सत्र के शुरू में प्रवेशोत्सव की तैयारी
- शत प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित करने के लिए अभिभावकों के साथ दल निर्माण करना।
- बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु माता-पिता, समुदाय को स्कूल से जोड़ना
- विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों, शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु विभाग से समन्वय स्थापित करना
- स्कूल तैयारी मॉड्यूल से स्वयं व शिक्षकों को परिचित कराना
- शुरुआती कक्षाओं में नामांकित हर बच्चे की मैपिंग कराना
- स्कूल पुस्तकालय को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना
- प्रारंभिक वर्षों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान करना
- विद्यालय प्रमुख अपने समस्त अधीनस्थ अध्यापकों को प्रौद्योगिकी के प्रति पहुँच में योगदान दे सकता है और ई-कंटेंट पर ध्यान केंद्रित करने हेतु निर्देशित कर सकता है। डिजिटल संसाधनों की रिपॉजिटरी यानी दीक्षा पर समय-समय पर क्षमता संवर्धन करने के लिए अपने शिक्षकों को प्रोत्साहित कर सकता है।
- कक्षा तीन तक अपने स्कूल में प्रत्येक कक्षा में पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करवाने के लिए लगातार विभाग से समन्वय स्थापित करना।
- बुनियादी कक्षाओं में नामांकित प्रत्येक बच्चे के डेटाबेस तैयार करने का प्रयास करना।

❖ कुछ चुनौतियाँ जिनका सामना विद्यालय को करना पड़ सकता है-

- 1 छात्रों की अनियमित उपस्थिति
- 2 विषय अध्यापकों का गैर-शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता के कारण विद्यालय में उपस्थित न रहना
- 3 विषय अध्यापकों के दीर्घावकाश के दौरान विद्यालय में आने वाली चुनौती
- 4 समय-समय पर आने वाली प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाएँ जैसे बाढ़, भूस्खलन, आग लगना आदि
- 5 प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान (FLN) विकास हेतु माता-पिता, समुदाय से अपेक्षित मदद न मिलना
- 6 बाल साहित्य की अनुपलब्धता

प्रधानाध्यापक के रूप में आप विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम को बढ़ावा देने में अन्य सहायक संस्थाओं का सहयोग किस प्रकार लेंगे ?



- राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन सी ई आर टी)
- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी बी एस ई)
- केंद्रीय विद्यालय संगठन
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एस सी ई आर टी)
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट)
- जिला स्तरीय शिक्षा अधिकारी एवं विकासखण्ड संकुल स्तरीय अधिकारी
- विकासखण्ड संसाधन केन्द्र तथा संकुल संसाधन केन्द्र
- गैर सरकारी संगठन

- विद्यालय प्रबंधन समितियाँ
- स्वयंसेवक
- शिक्षक और विद्यालय प्रमुख
- विद्यालय व आँगनबाड़ी केन्द्र
- बच्चे
- माता-पिता व समुदाय आदि

चिंतन प्रश्न :

- निपुण भारत हेतु परिवार एवं समुदाय को विद्यालय से जोड़ने के क्या-क्या तरीके हो सकते हैं ?

❖ माता-पिता एवं सामुदायिक जुड़ाव:

निपुण भारत योजना के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन के लिए माता-पिता एवं पूरे समुदाय की एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। लगभग अधिकतर समय बच्चे घर पर होते हैं ऐसे में बच्चों की सीखने की क्षमता स्कूल से ज्यादा घर में विकसित होती है। स्कूलों द्वारा यह प्रयास किया जा सकता है कि बच्चों के माता-पिता को बच्चों की शिक्षा से जोड़ा जाए। इसके लिए विभिन्न प्रकार के कदम उठाए जा सकते हैं जैसे कि स्कूल में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन जिसमें माता-पिता को बुलाया जाए, ईमेल, व्हाट्सएप आदि के माध्यम से माता-पिता को बच्चों की पढ़ाई से जोड़ना, बच्चों को गृह कार्य देना उसे नियमित जाँच जिससे माता-पिता को यह जानकारी समय-समय पर प्राप्त होती रहेगी कि बच्चे क्या पढ़ रहे हैं, कैसे पढ़ रहे हैं आदि।

❖ परिवार एवं समुदाय को जोड़ने के विभिन्न तरीके

- विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का संचालन
- अभिभावक शिक्षक बैठक (पी०टी०एम०)
- नियमित गतिविधियाँ भी समुदाय में की जा सकें
- स्कूल की गतिविधियों तथा बच्चे की प्रगति के बारे में माता-पिता को लगातार जानकारी भेजना।
- असाइनमेंट्स देना
- माता-पिता को ई-मेल व्हाट्सएप आदि के माध्यम से बच्चों की प्रगति के बारे में जानकारी प्रदान करना

❖ बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान की समझ और नेतृत्व पर ब्लॉग द्वारा अपनी समझ साझा करना

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान का दृष्टिकोण और इसमें नेतृत्व की समझ पर अपना एक ब्लॉग लिखिए।

नीचे दिए गये लिंक पर क्लिक करें-



<https://www.blogspot.com>



समेकन :

निपुण भारत के सफल क्रियान्वयन में यदि नेतृत्व प्रभावी रहता है तो बच्चों का अधिगम प्रतिफल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और बच्चों को आगे की कक्षाओं में अधिगम प्रक्रिया सहज होगी। साथ ही यदि हम छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने हेतु पेंटिंग, ड्रॉइंग, क्ले-वर्क, टॉय-मेकिंग प्रोजेक्ट्स और जाँच आधारित अधिगम, छात्र पोर्टफोलियो, क्विज, समूह कार्य, रोल प्ले आदि का भी उपयोग करें तो इससे सीखने के लिए मूल्यांकन हो पा रहा होगा। इसप्रकार बुनियादी शिक्षार्थियों को पढ़ाने वाले शिक्षक को लिए यह समझना जरूरी है कि बच्चे विभिन्न तरीकों से सीखते हैं और प्रत्येक कक्षा में अलग-अलग अधिगम स्तर होते हैं। अतः बच्चे ज्यादा तब सीखते हैं जब उन्हें कक्षा में बात करने और चर्चा करने के अवसर प्रदान किये जाएं। विद्यालय प्रमुख यह सुनिश्चित करे कि शिक्षकों द्वारा बुनियादी साक्षरता के घटकों पर आधारित गतिविधियों का निर्माण किया जा रहा है या नहीं साथ ही उन्हें बच्चों के बीच कैसे करवाया जा रहा है इसे भी देखा जाए। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान संबंधी सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में अभिभावकों व समुदाय का सहयोग लेकर बच्चों का अधिगम सहज बनाया जा सकता है। क्योंकि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में जहाँ विद्यालय में शिक्षक एक सुगमकर्ता के रूप में होता है वहीं दूसरी ओर अभिभावक की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। इसलिए ऐसे में विद्यालय प्रमुख की भूमिका बढ़ जाती है कि वह यह भी सुनिश्चित करे कि सीखने के प्रतिफलों से अभिभावकों को भी परिचित करवाये।

संदर्भ सूची / वेबलिंक्स:

- नई शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार
- निपुण भारत गाइडलाइन, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार
- ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट (जी0एम0आर0 2015)
- प्रारंभिक स्तर के लिए निष्ठा 3.0 का दीक्षा एप पर मॉड्यूल/कोर्स बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान मिशन का परिचय (FLN)
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) दिल्ली द्वारा जारी प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल पुस्तिका
- विद्या प्रवेश-स्कूल तैयारी मॉड्यूल
- निपुण भारत <https://pmmodiyojana.in/tag/nipun-bharat-new-guidelines/>
- <https://www.youtube.com/watch?v=I3kdoJe2OGI>

- <https://youtu.be/F4Ty9zYvtX8>

- <https://ncert.nic.in/ComicFlipBookEnglish/nipunbharat/mobile/index.html>
- मॉड्यूल/कोर्स बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान मिशन का परिचय (FLN)

<https://diksha.gov.in/explore->

[course/course/do_31337536091930624012410?referrer=utm_source%3Dmobile%26utm_campaign%3Dshare_content](https://diksha.gov.in/explore-course/course/do_31337536091930624012410?referrer=utm_source%3Dmobile%26utm_campaign%3Dshare_content)



- विद्यालय आधारित आकलन <https://www.youtube.com/watch?v=5ZMdoAk1N8>
- बाल-पत्रिकाएँ <https://ncert-nic-in/dee/firkee&magazine-php/ln=>
- बाल साहित्य से भरे पुस्तकालय <https://ncert-nic-in/dee/barkh&series-php/ln=>
- बरखा सीरीज <https://ncert-nic-in/dee/barkh&series-php/ln=>
- विद्या प्रवेश-स्कूल तैयारी मॉड्यूल <https://ncert-nic-in/pdf/vidyapravesh.pdf>
- प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल पुस्तिका-NCERT
<https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/tilops101.pdf>



[https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/Learning Outcomes%E2%80%93Hindi.pdf](https://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/Learning_Outcomes%E2%80%93Hindi.pdf)

- ग्लोबल मॉनिटरिंग रिपोर्ट (जी0एम0आर0 2015)
<https://openknowledge.worldbank.org/bitstream/handle/10986/22547/9781464806698.pdf?sequence=19&isAllowed=y>